संडे नवभारत टाइम्स

23 अगस्त 2015

यहां से कर सकते हैं हिंदी में MBA

■ मनीष झा, मुंबई

वैश्वीकरण के दौर में दिन-ब-दिन हिंदी के बढ़ते महत्व को देखते हुए अब महाराष्ट्र में हिंदी में मैनेजमेंट इन बिजनेस ऐडमिनिस्ट्रेशन (एमबीए) की पढ़ाई शुरू की गई है। यह दो वर्षीय कोर्स पूर्णकालिक कोर्स है। इस कोर्स के शुरू होने से न सिर्फ हिंदी भाषी युवाओं को लाभ मिलेगा, बल्कि हिंदी के इतर दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं को जानने वाले भी एमबीए कर सकते हैं। यह जानकारी महाराष्ट्र के वर्धा में स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रफेसर बी.एस. मिरगे ने दी। विश्वविद्यालय की इस पहल के बारे में शिक्षाविद् का कहना है कि हिंदी में एमबीए की शुरुआत एक अच्छी पहल है। अंग्रेजी भाषा देश के हर कोने में पहुंच कर हिंदी को लुप्त करती जा रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, सबसे ज्यादा अंग्रेजी बोलने वाला देश भारत है, जहां की राष्ट्रभाषा हिंदी मानी जाती है। हिंदी में एमबीए लाने की पहल से हिंदी को आगे बढ़ाया जा सकता है।

बनारस के संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के बाद देश की दूसरी संस्थान

हिंदी में एमबीए पढ़ाने वाला दूसरा विश्वविद्यालय

वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी में एमबीए की शुरुआत करने वाला देश का दूसरा विश्वविद्यालय है और महाराष्ट्र का पहला। देश का प्रथम विश्वविद्यालय बनारस का संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय है, जहां हिंदी में एमबीए पढ़ाया जाता है। एमबीए कोर्स की गत 12 अगस्त को औपचारिक शुरुआत की गई। इस मौके पर विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि हिंदी में एमबीए की शुरुआत होने से हिंदी पढ़ने वाले या हिंदी में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को काफी लाभ मिलेगा। उनके करियर का विकास होगा और उन्हें आगे बढ़ने का अच्छा मौका मिलेगा, क्योंकि हम ज्ञान और विज्ञान, दोनों को हिंदी भाषा में रख सकेंगे। इससे हिंदी भाषा का विकास भी होगा और हम अपनी आधुनिकता को हिंदी में भी बता सकेंगे।

हिंदी भाषी विद्यार्थियों को अच्छे अवसर मिलेंगे। गैर हिंदी भाषी छात्र-छात्राओं को भी एमबीए करने से काफी लाभ होगा। इस कोर्स को करने के विद्यार्थियों का विकास होगा और वे हिंदी के जरिए ज्ञान-विज्ञान और व्यापार के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं।

- प्रो. दयानंद तिवारी, हिंदी विभागाध्यक्ष, एसआईडब्ल्यूएस कॉलेज, वडाला